दस्तावेज बन्देमातरम CHHRTER

यत्र-तत्र

YATRA-TATRA

(वतन्त्रता सेनानियों व भूतपूर्व सैनिकों का मासिक पत्र)

वर्ष : २ अंक ५-६ १९८० नवम्बर-दिसम्बर

LONG LIVE INDIRA GANDHI
NATION'S LIGHT

She is first in war first in peace and first in the hearts of her country men.

—Yatra Tatra

जनवरी अंक नेताजी विशेषांक

लघु कथा

देशभक्ति

—जगदीश कश्यप

उसके चेहरे पर तकलीफ दिखाने वाली बहुत सारी झुर्रियाँ उगी हुई थीं। उसके सीने पर सम्मान सूचक तमगे लटके थे, जिससे पता लग सकता था कि उसने देश-आजादी के लिए अपनी जवानी बर्बाद कर दी थी और जेलों में आजाद मुल्क के सपने देखा करता था। रौबदार मूँछें उसके आत्म-सम्मान का सूचक थीं।

'मैं अपनी बेटी के अपहरण की रिपोर्ट लिखवाना चाहता हूँ।' उसने कमजोर किन्तु करारी आवाज में कहा। इन्स्पेक्टर ने बूढ़े का थका हुआ चेहरा देखा और लापरवाही से अखबार पढ़ने में व्यस्त हो गया।

बूढ़ा पहले तो चुप रहा, फिर सामने दीवार पर लगी गांधीजी की बड़ी फोटो देखता हुआ बोला—'साहब में रिपोर्ट लिखवाने आयी हूँ, गुण्डों ने मेरी बेटी का अगुवा कर लिया है।'

'बराबर वाले कमरे में जाओ।' इन्स्पेक्टर की लापरवाही भरी आवाज फिर सुनाई दी।

अचानक बूढ़े ने करारी आवाज निकाली—'ए मिस्टर जानते हो मैं कौन हूँ? इस देश का रखवाला यानि स्वतंत्रता सेनानी।'

इन्स्पेक्टर ने बूढ़े की तरफ इस तरह देखा, मानो कोई पागल अन्दर घुस आया हो। उसने तुरन्त चेहरे पर के भाव बदले और बोला—'आइये, आप यहाँ बैठिये।' उसने तुरन्त घंटी बजाई तो एक सिपाही हाजिर हो गया।

'देखो इनकी रिपोर्ट लिखवा दो। इनकी लड़की का अपहरण हो गया है।'

जब बूढ़ा चला गया तो इन्स्पेक्टर ने कहा—'वो जो लड़की शहर के सेठ के यहाँ से बरामद हुई थी, क्या इसी बूढ़े की है?' 'जी सरकार, रिपोर्ट से तो ऐसा ही मालूम पड़ता है। सेठ शहर का सबसे बड़ा जमाखोर और तस्कर है। उसने जब अपना काम कर लिया तो लड़की पर कोठी में चोरी का आरोप लगवाकर गिरफ्तार करा दिया।'

यह सुनते ही इन्स्पेक्टर सतर्क हो गया। उसके चेहरे पर बहशी किस्म के भाव उभरने लगे।

'उसे मेरे सामने अब तक क्यों नहीं लाया गया?' इन्स्पेक्टर गर्म हो गया। 'सा'ब वह सेठ का बासी माल है आप क्या करेंगे?'

इन्स्पेक्टर यह सुनकर कुछ सोचने लगा। वह होठों पर जीभ फिराते हुए बोला—'आज बासी ही चलेगा। ऐसा करो, उसे मेरे कमरे में भेज दो।' सिपाही ने यह सुनते ही मरे हुए अन्दाज में सैल्यूट मारा।

बूढ़े ने रिपोर्ट में जवान लड़की का नाम देशभक्ति लिखवाया था।

सूचना

सब भाइयों को सूचित किया जाता है कि दिलवाली खत्री सभा का वार्षिक अधिवेशन ११ जनवरी १९८० को होने जा रहा है। रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सभा का चुनाव भी होगा। इसी संदर्भ में २८ दिसम्बर १९८०-को खेल प्रतियोगिता भी है।

समस्त खत्री बिरादरी सभा के सदस्यों से निवेदन है कि इस पुनित कार्य को प्रभावी ढंग से सफल बनाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर यश के भागी बनें।

निवेदक

हरप्रसाद मेहरा प्रधान व जाति सेवक

संवेदना : कर्तव्य

खत्री उपकारक सभा (पंजी०) दिल्ली के भूतपूर्व प्रधान जातिरत्न लाला फकीर चन्द मेहरोत्रा के निधन से दिल्ली ही नहीं वरन समस्त खत्री समाज को जो क्षति हुई है वह अपूरणीय है। उनकी निस्वार्थ सेवा अनुकरणीय है। अब हमारा यानी सब खत्री भाइयों का कर्त्तव्य हो जाता है कि समस्त खत्री भाई एक सूत्र में बंधकर खत्री समाज के उत्थान के लिए दृढता व कर्मठता से कार्यरत होकर उस मनीषी की आत्मा को श्रधांजली अर्पित करें।

शहीद स्वतंत्रता सेनानियों का महत्व

शहीदों के ही खूँ से हर वतन गुलजार होता है।
लहू के खाद से ही सब्ज सब्जाजार होता है॥
लगादी जानोजर की बाजियां निज देश खिदमत में।
बतन के आशिकों का विश्व में सत्कार होता है॥
भगोड़े दुम दबाकर भग गये, इनकी शजाअत से।
इन्हीं से वातिलों का हौसला बेजार होता है॥
बहुत हीं जनता शासन वाले इनसे द्वेष रखते थे।
चुनावों में इसी से उनका बहिष्कार होता है॥
'विबोध इन मनचलों से प्रेम करना देश सेवा है।
कि इनकी वे वहा खिदमात का इकरार होता है॥

यत्र तत्र परिवार

० सम्पादक व प्रकाशक
प्रेमगोपाल मेहरा दिल्लीकर
० सह-सम्पादक
जगदीश कश्यप
० वित्तीय सम्पादक
ओमप्रकाश सैनी
सम्पादक 'सैनी ध्वनि'
० प्रबन्ध सम्पादिका
शोभा मेहरा
परामर्शदाता मंडल
जनरल के०एम० करिअप्पा (रिटायर्ड)
डा० वाई० एस० बहल (रिटायर्ड) वायुसेना
श्री शीलभद्र याजी कार्यवाहक प्रधान आल इन्डिया फ्रीडम फाईटर्स आरगनाईजेशन, नई दिल्ली
श्री रामलुभाया चानना, कार्यवाहक प्रधान दिल्ली प्रदेश स्वतंत्रता सेनानी संगठन
श्री जसवंत सिंह वेदी
आल इण्डिया फ्रीडम फाइटर्स सैनिक-संघ
श्री हरप्रसाद मेहता एडवोकेट
सुभाष जैन, सलाहकार आयकर व बिक्रीकर
राजाराम शास्त्री, हरियाणा लोकमंच
शंकर लाल 'विंदु,'
सतपाल भाटिया, मन्त्री शाहदरा क्षेत्र आर्य प्रतिनिधि सभा
रामभजन सिंह स्वतन्त्रता सेनानी

नवम्बर मास के विशेष दिन

९ नवम्बर १९४३ को श्री नथ्थाल शाह अहमदाबाद जेल में शहीद हुए।

१० नवम्बर १९०८ को शहीद सतल लाल दत्त को अलीपुर सेंट्रल जेल में फांसी लगा दी गई थी अलीपुर व मुजफ्फरपुर बमकांड के सरकारी एप्रूवर गोसाईं को गोली मार देने के कारण।

१४ नवंबर स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री का जन्म दिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

१९ नवम्बर १९१५ को लाहौर सेंट्रल जेल में गदर पार्टी के शहीद करतार सिंह, विष्णु गणेश पिंगले, जगत सिंह और हरनाम सिंह को पहले लाहौर षड़यन्त्र केस में फांसी पर लटका दिया गया।

१९ नवम्बर का दिन श्रीमती इन्दिरा गाँधी का जन्म दिन महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

२१ नवम्बर १९०८ को अलीपुर सेन्ट्रल जेल में शहीद सत्येन्द्र बोस को फांसी पर चढ़ा दिया गया।

२२ नवम्बर १९१५ में शहीद मनोरंजन सेन गुप्ता सशस्त्र क्रांति के लिए जर्मन जहाज से शस्त्र ले रहे थे तो घायल हो गए और पकड़े गए थे।

२३ नवम्बर १९७७ को श्री प्रकाशवीर शास्त्री रिवाड़ी रेल एक्सीडेन्ट में स्वर्गवासी हो गए।

बटोरते है फलत: संस्थान द्वारा खर्च किया गया पूरा पैसा उस युवक या भूतपूर्व सैनिकों को नहीं मिलता। कम से कम भूतपूर्व सनिकों को तो किसी प्राइवेट एजेंसी के मारफत आने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

९—अस्पताल की सुविधा

भूतपूर्व सैनिकों को वो सारी सुविधाएं सिविल अस्पताल में मिलनी चाहिए जो सेवाकाल में मिलती थी यदि आवश्यक हो तो इसका खर्चा केन्द्र से मिल जाना चाहिए।

१०—कैंटीन सुविधा

भूतपूर्व सैनिकों को शराब सहित कैन्टीन की सारी सुविधाएं मिलनी चाहिए।

११—भूतपूर्व सैनिकों को किसान समझा जाना चाहिए

भूतपूर्व सैनिकों को काश्त के लिए नहरी इलाकों में कृषि भूमि एलाट नहीं की जा रही है यह अन्याय तुरन्त बन्द हो जाना चाहिए और उन्हें नहरी इलाकों में भी कृषि भूमि का एलाटमेंट होना चाहिए। ऐसे किस्से भी है कि १९५६ से सांझा खेती करने वाले भूतपूर्व सैनिकों को अब तक खतेदारी अधिकार नहीं दिए गए है।

सारांश

यहां यह कथन असंगत नहीं होगा कि कुछ जनहित सरकारें, ऊपर दी गई सारी सुविधाएं देती है कि जैसा इन्डियन एक्स सर्विस मैन सं० १९३ जून ८० पृष्ठ १ आखिरी पैरा एवं सं० १९५ अगस्त ८० पृष्ठ १२ में दिया है।

अपनी शिकायतें भेजिये

आपकी रोजमर्रा की जिंदगी में अक्सर ऐसा होता है, कि जब भ्रष्टाचार के कारण आप बहुत परेशान होते हैं। लेकिन मन मसोस कर बैठने के अलावा और कुछ नहीं कर पाते लेकिन यह स्थिति बहुत खतरनाक है, इससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। आप अपनी उन परेशानियों को हमें लिखकर भेज दें। हम न केवल उन्हें प्रकाशित करेंगे, बल्कि उसे सम्बन्धित अधिकारियों तक पहुंचाकर आपके कष्ट दूर करवाने के भी प्रयास करेंगे।

—सम्पादक

यत्र तत्र ३१६७, दस्सान स्ट्रीट दिल्ली-६

स्वतंत्रता सेनानी के दुखी दिल की आवाज

- हुकुमचन्द वर्मा

बी-११४/ए, गली नं० १ मजलिस पार्क, दिल्ली-३३

न बन हिन्दू न बन मुसलमान, गर कुछ बनना चाहता है तो इन्सान बन।

खुदा की दुनिया को मिटाकर तूभी सदा न रहेगा,
यह तो बता जरा फिर तू किसे राम और रहीम कहेगा।
राम और रहीम के खूँ से जब तेरे हाथ सनेगें,
तो फिर यह मंदिर और मस्जिदे वीरान बनेगें।
छोड़ कर राहे कुफ़ खुदा परश्ती की पहचान बन
खूने मखलूक जो बहाते वे बेदीन बेईमान हैं।
न वह सच्चे हिन्दू हैं न सच्चे मुसलमान हैं।
भड़काते जो जनता को मजहब के नाम से
मोहब्बत नहीं उन्हें रहीम और राम से
निकलें तीर मोहब्बत के तू ऐसी कमान बन।
तू भी कुछ सोच ए मखलूकए खुदा
इन बेदीनों से अपना दामन छुड़ा
गर रहना है हिंद में तो इसे अपनाना होगा,
चला कर हवा मोहब्बत की नफरत को मिटाना होगा
हिफाजत में मरके किसी की तू खुदा की शान बन
है गर मोहब्बत इनसे उसे दिखाना पड़ेगा,
जो है नफरत इससे तो यहाँ से जाना पड़ेगा।
ए ! दुश्मने हिंद तू इसे मिटा न पाये
करके मुँह काला तेरा यहाँ से निकाला जायेगा।
मिटा देंगे हस्ती तेरी गर तू गया शैतान बन।
कोई गुरु भी खुश नहीं तुझसे, न यशु मसीह
तुझे न बख्शेंगे राम और रहीम भी कभी,
हर खुदा परस्त तुझे गिलाजत का कीड़ा कहेगा
जो नदी दोज़ख की तू उसमें तड़फता रहेगा
मान कहना वर्मा का न अनजान बन
गर कुछ बनना चाहता है तो इन्सान बन।

राजस्थान भूतपूर्व सैनिक संघ

भूतपूर्व सैनिकों की जयपुर में १२ अक्तूबर को हुई पाँचवी आम सभा के प्रस्ताव ।

१—पशन में संशोधन

जब भी महंगाई या जीवन यापन की समस्याओं या किसी और कारण से पैंशन में वृद्धि की जावे तब पुराने पैंशनरों को भी समान पैंशन उसी तारीख से मिले, शुरुआत के लिए सारे पैंशनरों का पैंशन १ अप्रैल ७९ के मुताबिक तुरन्त चालू होनी चाहिए । सही हालत समझाने के लिए सबसे कम पैंशन पाने वाले सिपाही के पैंशन मान नीचे दिए गए है—

पैंशन की तारीख	पैंशन	रिलीफ	योग	टिप्पणी
१-१-१९७३ से पहले	४०/-	६०/-	१००/-	अभी का २/३
१-१-७३ से ३१-३-७९	७६/-	४५/-	१२१/-	अभी का लगभग ३/४
१-४-७९ के बाद	१२०/-	३०/-	१५०/-	अभी की पैंशन मान

२ पैंशनरों को नौकरी मिलनें पर पूरी पेंशन मिलनी चाहिए—

अभी पैंशनरों को नौकरी मिलने पर "रिलिफ" नहीं मिलती, नतीजा यह होता है कि पुराने पैंशनरों (जिन्हें वैसे भी कम पैंशन मिलती है) का वेतन मान अनुपात और भी कम हो जाता है । मिसाल के लिए—

पैंशन की तारीख	पैंशन दी जाने वाली रकम	टिप्पणी
१-१-७३ से पहल	४०/-	अभी के मान का १/३
१-१-७३ से ३१-३-७९ तक	७६/-	अभी के मान का ३/४ से भी कम
१-४-७९ के बाद	१२०/-	अभी का पैंशन मान

३—पैंशनरों और सेवारत दोनों को समान महंगाई मिले

जबकि पैंशनरों और सेवारत दोनों को एक ही प्रकार की कीमत सूचनांक में जीवित रहना होता है, पैंशनरों को केवल आधी महंगाई देना न्याय संगत नहीं हो सकता ।

४—कम्यूट की हुई पैंशन दुबारा शुरु करना

सरकार और पैंशनर के बीच के कन्ट्रेक्ट को बहाना बनाना उचित नहीं है । रिटायर होने वाले को उस समय पैसे की आवश्यकता होती है और वह किसी भी प्रकार के कान्ट्रेक्ट पर हस्ताक्षर कर देता है ।

५ –पुरानी रियायतों के पेंशनमान भी भारतीय सेना के बराबर किए जावें

जब भी पुरानी रियायतों के पैंशनरों की बात कही जाती है, तो उत्तर मिलता है कि 'उन्हें, उस रियासत के रुल के अनुसार पैंशन मिल रही है ।' यह दलील बेमाने है क्योंकि आज वो रियासतें हैं नहीं, अतः वे अपने कानूनों में सुधार कर नहीं सकती । आज की परिस्थितियों के अनुसार पैंशन देने की जिम्मेवारी आज की सरकार की है ।

६ राजनीतिक पीड़ित

ब्रिटिश साम्राज्य के समय कुछ सैनिकों को बिना उचित कारण के नौकरी से बरखास्त कर दिया गया था उनमें से काफी ऐसे हैं जिन्हें व्यवस्थित नहीं किया गया है, ऐसे भूतपूर्व सैनिकों को उचित पैंशन तथा अन्य सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए ।

७—फैमिली पैंशन

१ जनवरी १९६४ से पहले रिटायर होने वाले भूतपूर्व सैनिकों की विधवाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय हैं उन्हें एक तरह से भीख मांगनी पड़ती है वे सम्मान पूर्वक जीवन निर्वाह नहीं कर सकतीं । यह अत्यन्त आवश्यक है कि सरकार उनके लिए कम से कम १२०/- महावार पैंशन तुरन्त मंजूर करे ।

८—पचपन वर्ष की उम्र तक काम का अधिकार

सैनिकों को ३५-४० की उम्र [जिन्हें २५-३० की उम्र तक रिटायर हो जाना चाहिए था ।) तक रिटायर होना पड़ता है इस उम्र से अधिक जवान सेना के लिए उपयुक्त नहीं रहते, लेकिन अर्ध —सैनिक, पुलिस, सिक्योरिटी गार्ड एवं अन्य असैनिक कार्यों के लिए वे पूर्ण रूप से उपयुक्त रहते हैं, अतः उन्हें वहाँ (बी. एस. एफ. सी. आर. पी. सीक्योरिटी गार्ड आदि) में सीधा व्यवस्थित किया जा सकता है । आजकल ऐसी बृहत सी निजी सिक्योरिटी कम्पनियां कार्यरत हैं जो नौकरी के इच्छुक भूतपूर्व सैनिक एवं अन्य बेरोजगार युवकों का भयंकर रूप से शोषण करती है, कुछ एक सरकारी संस्थान भी इन संस्थाओं को प्रोत्साहन देते हैं जो कि कमीशन के रूप में भारी मुनाफा

ताजमहल

--अनिल कुमार 'मायूस'

□

ताज को सर बुलन्दी है एक शहनशाह की मौहब्बत के निशां होने की,
यहाँ हजारों मिट गए और हजारों मिट जायेंगे
इस उल्फते इश्क में रारे राह फनां होने वाले
ये नाकाम ही जीते हैं और गुमनाम ही मिट जायेंगे
क्योंकि ये मुफलिस हैं, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले,
कल कौन कहेगा दास्तां उन बेजुबांओं के रोने की
ताज को सर बुलन्दी है एक शहनशाह की मौहब्बत के निशां होने की
क्योंकि ये मुल्के अदम के पहुंचे हुए वासिन्द न थे
ये भूख और प्यास की बेकसी को सहा करते हैं
क्योंकि ये औरों की तरह शहनशाह हिन्द न थे
ये नाम के लिए जीते हैं वरना बेमौत मरा करते हैं
फिर कौन करेगा इबादत उनके जल्वानुमां होने की
ताज को सर बुलन्दी है एक शहनशाह की मौहब्बत के निशां होने की
खल्वतों में खड़े तवील से महल की अकीदत क्या
जिसमें हजारों गरीबों ने लहू का बलिदान दिया हो
उसके शक्ले-जमील औ मुनक्कश की रंगीयत क्या
जिसके हर जर्रे में मुफलिसों ने अपना अरमान दिया हो
फिर उस कत्लगाह को क्या सर बुलन्दी है ताजमहल होने की
ताज को सर बुलन्दी है एक शहतशाह की मौहब्बत के निशां होने की
गर मजनू, राझाँ, महीवाल हम जैसे मुफ़लिस न होते
तो हर गली, हर कूचे में एक ताजमहल होता
ये हजारों किस्मत के मारे, सितम की खलिश न होते।
तो क्या मुफ़लिसों की लाश पर बना ताजमहल होता
काश कोई सुने सदा सदियों से सोई रुहों के रोने की
ताज को सर बुलन्दी है एक शहनशाह की मौहब्बत के निशां होने की।

बिलख कर अपने पुत्र को पाने की असफल चेष्टा कर रही है। पास जाने पर ऋषि को ज्ञात हुआ कि आज पुण्य तिथि माठी अमावस्या है। काल भैरव की गुफा में बालक की बलि दी जायगी। जिससे बालक के माता-पिता एवं वंश धन्य हो जाएंगे। माता के रुदन एवं बालक के भोलेपन से ऋषि द्रवित हो उठे और स्वंय को बलि ने लिये प्रस्तुत कर, बालक को छोड़ देने के लिए कपालिक से अनुरोध किया।

मां और पुत्र तो प्रसन्नता से मूर्च्छित हो गये। दयानन्द को नियमानुसार बलि वेदी पर लाया गया। ऋषि ने एक बार सबकी ओर देख आखें बंद करलीं, मानो उन्हें क्षमादान दे दिया। लेकिन तभी गोलियों की आवाज हुई और सभी लोग भाग गये। उस दिन मराठी फौज के लोग नरबलि को बंद कराने के लिए उधर घूम रहे थे।

दयानन्द ने महसूस किया कि लोगों को अन्धकार से उबारने के लिए मात्र धर्म ही पर्याप्त नहीं, अतः उन्होंने प्रचार कार्य भी निरन्तर जारी रखा। वे स्थान-स्थान पर जाते और पंडितों, शास्त्रियों संन्यासियों और गृहस्थियों से वार्ता कर उन्हें प्रभावित करते। अपने इस व्रत को पूर्ण करने के लिए वे ऐसे अवसरों की ताक में रहते जहां अपार जनसमूह एकत्र हो और तब वे वहां पहुंच कर अपनी "पाखंड खंडनी पताका" गाड़ देते। पूरी प्रतिभा एवं तर्कों से समाज में पनप रहे भ्रष्टाचार, मूर्तिपूजा का खंडन आदि विचारों को प्रस्थापित करते। शास्त्रार्थ में उनके सम्मुख आने से विधर्मी लोग घबराते थे।

दयानन्द जिस भी व्यक्ति में बुराई देखते उसके मुँह पर ही कह देते, साथ ही उसे सत्य मार्ग पर चलने का उपदेश भी देते। अनेक व्यक्तियों ने ऋषि के सम्पर्क में आकर, उनसे प्रभावित हो सन्मार्ग पर चलने का व्रत लिया। ऐसी ही कई घटनाओं को देखते हुए महात्मा गाँधी जी ने एक बार, कहा था कि "महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों में से एक थे। इनका चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या का विषय है। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान तर बहुत अधिक पड़ा है।"

आज समस्त विश्व में वेदों का प्रचार हो रहा हैं, विदेशों में भी आर्य-समाज का विकास हो रहा है। तथा उसके माध्यम से मनुष्य का भौतिक एवं आध्यात्मिक विकाश होता है। इस तथ्य का भी समर्थन किया जा रहा है।

यह सर्वविदित है कि दयानन्द ने हमें वैदिक संस्कृति से, वेदों के अपार ज्ञान एवं मानव धर्म से जोड़ने में अविस्मरणीय भूमिका निभायी। इसी धारणा से ऋषि के पदचिन्हों पर चलने वाले अब विश्वशांति की समस्या का

आओ एक दीप बनें

□ आशा अरोड़ा

गुरू ने तीन वर्षों में शिष्य को बखूबी पहचान लिया था । वह शिष्य से मात्र लौंग की दक्षिणा क्यों स्वीकारता ? यही तो शिष्य है जो उसके स्वप्न को साकार करेगा । अतः शिष्य से दक्षिणास्वरूप मांग की स्वामी विराजानन्द ने—"मुझे तो तुम से और ही दक्षिणा लेनी है । मैं चाहता हूँ कि तुमने जो ज्ञान मुझसे प्राप्त किया है । उसका संसार में प्रकाश करो ।"

शिष्य की आंखें चमक उठीं । उसे तो जीवनलक्ष्य मिल गया । व्रत लेते हुये वह बोला—"मैं संसार में फैले अन्धकार के विरुद्ध युद्ध करुंगा । संसार के जीव जिन बेड़ियों में फंसे हैं, उन्हें काटूंगा । गुरुदेव, आशीर्वाद दो कि मैं सफल होऊँ यही शिष्य संसार में ऋषि दयानन्द के नाम से विख्यात हुआ ।

ध्येयनिष्ठ दयानन्द वर्तमान धर्मगुरुओं की भांति न तो कभी प्रसिद्धि के पीछे भागे और न ही कभी सत्ता की आराधना में समय बेकार किया । उन्होंने वेदों को सम्पूर्ण ज्ञान का स्रोत कहा और "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना कर मानव मात्र की उन्नति के मार्ग पर अग्रसर किया । आर्य समाज की स्थापना की एवं उसके दस नियमों को निर्धारित किया लेकिन कहीं भी स्वंय को प्रस्थापित नहीं किया ।

राजनीतिज्ञ जनमतसंग्रह अपनी प्रसिद्धि बढ़ाने एवं सत्ता हथियाने के लिए करता है, इसलिये वह समय-समय पर जनता के बीच नैतिक भाषण करता है और जनता को उस पर चलने की सलाह देता है । तत्कालीन राजनीतिज्ञ अंग्रेजों को भारत से खदेड़ना चाहते थे लेकिन आंदोलन, सत्याग्रह, हिंसा, उथले तर्कों एवं नारेबाजी को अपनाकर ही । अर्थात् वे किसी ऐसे कर्म की और उत्सुक नहीं थे जिसका दूरगामी परिणाम हो । चारों ओर भारतीय सुविधाभोगियों ने तर्क दिये । तब ऋषि ने समझाया—"सुराज्य कैसा भी हो स्वराज्य से अच्छा नहीं होता ।" उसके बाद उन्होंने रचनात्मक कार्यों में अपने को लीन कर दिया जिनका परिणाम स्वराज्य प्राप्त करना था ।

एक बार अन्धेरी रात में ऋषि ने देखा कि नदी के किनारे एक बालक को स्नान कराकर कुछ लोग नाचते आ रहे हैं और बालक की माता बिलख-

समाधान वैदिक धर्म में खोजने लगे हैं । यह ऋषि की आशाओं के अनुरूप ही है । "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" इस वेदवाक्य को ऋषि ने अपने जीवन का ध्येय बनाया । उनका प्रत्येक कार्य इसी ओर उन्मुख था । आर्य का अर्थ संकुचित नहीं अपितु गुणवाचक है । मानवीय गुणों से सम्पन्न होना ही आर्य का लक्ष्य है । अतः विश्व को श्रेष्ठ मानव बनाना आर्य बनाना ही आर्य समाज का ध्येय है और इसी ध्येय के परिचायक है आर्यसमाज के दस नियम ।

दीपावली की दीपों भरी रात में ऋषि ने देखा कि आर्य समाज में बहुत से दीपक प्रकाश फैलाने लगे हैं, तब उन्होंने आश्वस्त हो महाप्रयाण किया । आर्यसमाज के सौ वर्ष लम्बे जीवन में ऐसे दीपकों की लम्बी श्रृंखला है जिन्होंने संसार में प्रकाश फैलाया । आइये हम भी एक छोटा सा दीपक बनकर धरती के अन्धेरे को जितना भी सम्भव हो सके दूर करें । यही ऋषि के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है ।

ज्योतिर्मय कर दो

भू का व्यापक अन्धकार हर,
दिव्य, जनः मन के विचार कर,
आर्य प्रणाली का धरती पर—
सत्य समन्वित शुचि प्रचार कर—
जग यह ज्योतिर्मय करदो ।
जागे मनुजों का मनुजत्व,
भागे भू का सब दनुजत्व,
हों विस्तीर्ण धरा पर सारी—
मानवता के सच्चे तत्व—
जन गण को निर्भय कर दो ।
हों संलग्न सृजन में सारे,
नव आलोक बिखेरें तारे,
निर्माणों के दीप निरन्तर—
जलें धरित्री पर अति न्यारे,
सद्गुण से मानव उर भर दो ।
जग यह ज्योतिर्मय कर दो ।

—राधेश्याम 'आर्य'

भारत सरकार की घोषणा

भारत सरकार ने नीचे लिखे निर्णय लिए हैं जो कि पहली अगस्त १९८० से व्यवहारिक हैं स्वतन्त्रता-संग्राम पेंशन योजना, १९७२ के लिए।

१. स्वतंत्रता-संग्राम पेंशन योजना का नाम अब स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना है।

२. जीवित स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की पेंशन अब रु० २०० से ३००/ करदी गई है।

३. स्वतंत्रता संग्राम विधवाओं को पेंशन अब रु० १००/ से बढ़ाकर रु० २००/ प्रति माह कर दी गई है। और अतिरिक्त रु० ५०/ प्रत्येक अविवाहित पुत्री के लिए दिए जायेंगे जो कि कुल जोड़ रु० ३००/ से अधिक नहीं होगा।

४. वार्षिक आय रु० ५,०००/ की आमदनी की बंदिश हटा दी गई है। अब प्रत्येक स्वतंत्रता सेनानी स्वतंत्रता सैनिक सम्मान प्राप्त कर सकता है।

५. स्त्री स्वतंत्रता सेनानी कवीले वाले/सूचित/ जनजाति आदि स्वतंत्रता सेनानियों के लिए जेल अवधी छह मास से घटाकर तीन माह करदी गई है। इस प्रकार यह लोग पेंशन पाने के अधिकारी होंगे।

६. भूमिगत कार्य करने के कारण नजरबंद रहे या शहर या प्रदेश से निष्काशित कर दिये गये और प्रार्थी इस अवधी का कोई भी सबूत नहीं दे पाते हैं सरकारी रिकार्ड के आधार पर। अब तक उनके मामले नही सुलझ पाये हैं। इस मामले में व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के प्रमाणपत्र मान्य होंगे जोकि स्वयं पांच वर्ष या इससे अधिक जेल में रहे हैं।

जो स्वतंत्रता सेनानी नियम ४,५,६. के अन्तर्गत आते हैं। वे लो स्वतंत्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना के लिए एक वर्ष तक आवेदन कर सकते हैं यानी ३१ जौलाई १९८१ तक।

इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता सेनानियों के लिए बैंक द्वारा पेंशन प्राप्त करने की सुविधा १८.८०. से आरम्भ कर दी है। यह भारतीय बैंक (स्टेट बैंक) और उसकी शाखाओं व अन्य राष्ट्रीयकृत बैंक व उनकी शाखाओं द्वारा ही प्राप्त हैं।

इसके लिए जिनकी पेंशन भारत सरकर द्वारा स्वीकृत है वह जिस सरकारी खजाने से पेंशन लेते हैं वहाँ पर आवेदन दे दें। उसमें यह लिखें: १ नाम व पूरा पता (२) पी पी० ओ० नम्बर (३) बैंक का नाम और ब्रांच जहाँ से वह पेंशन लेना चाहते हैं। (४) सेविंग्स/करेंट खाता न०

पेंशनर का यदि कोई खाता नहीं खुला है उन बैंक ब्रांच में तो वहाँ पर अपने नाम का सेविंग्स या करेंट खाता खोल लें। कोई बिल बनाकर देने की जरुरत नहीं है। पेंशन की रकम अपने आप हर माह पेंशनर के खाते में जमा करदी जावेगी। पेंशन नकद नहीं दी जावेगी और न दो नामों के खातों में जमा की जा सकेगी।

यज्ञ तत्व

आश्चर्यजनक किन्तु सत्य

० श्री जेठा सिंह हंजरा ०

१. अब तक विश्व के छः राष्ट्र परमाणु शक्ति सम्पन्न समाज में प्रवेश कर चुके हैं। ये अमेरिका (१९४५) सोवियत संघ (१९४९) ब्रिटेन (१९५२) फ्रांस (१९६०) चीन (१९६४) भारत (१९७४) अगले दशक तक १३ राष्ट्र और इस पंक्ति में सम्मिलित हो जायेंगे।

२. विश्व में कुल परमाणु बमों की संख्या लगभग ६०००० हजार है।

३. दूसरे विश्व के बाद से लेकर अब तक परमाणु हथियारों के निर्माण पर ६,००० डालर खर्च हो चुके हैं।

४. विश्व में परमाणु हथियारों के (अस्त्र+शस्त्र) निर्माण पर प्रति वर्ष ३५/३६ खरब रु० खर्च होते है।

५. लगभग ४ लाख वैज्ञानिक तथा ६-७ करोड़ के बीच लोग इन हथियारों के निर्माण में जुड़े हैं।

६. अमेरिका तथा रूस इस पृथ्वी को १२ बार नष्ट करने की क्षमता रखते हैं।

७. हमारे देश में साँप हर वर्ष फसल नष्ट करने वाले चूहों को खाकर करीब एक करोड़ लोगों को भूखा मरने से बचाते हैं।

८. भारत की जनसंख्या की वर्तमान दर यदि २.३% रही तो सन् २०२५ तक हमारी जनसंख्या १.९४ अरब हो जाएगी।

९. विश्व में कुल मिलाकर छोटे-बड़े १३३ युद्ध लड़े जा चुके है।

१०. यदि विश्व की जनसंख्या इसी तेजी से बढ़ती गई तो अगले ६०० वर्षों में प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से ३ फीट जमीन आएगी।

११. पश्चिमी जर्मनी तथा फ्रांस की जनसंख्या प्रतिहजार १७ के हिसाब से गिर रही है।

॥ स्वाध्यान्मा प्रमदः ॥

देश में बढ़ती अनुशासनहीनता, अनैतिकता व अमानवीयता से सभी बुद्धिजीवी चिंतित हैं। इन सभी बुराइयों को दूर करने के लिए सत्य के प्रकाश के प्रचार संसार में आर्य युवक परिषद (नई दिल्ली पंजीकृत) ने महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओं का आयोजन गत बीस वर्ष से कार्यरत है और दिन व दिन उन्नति हो रही है।

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी वर्ष १९८१ में विशेष आयोजन किया गया है। इस पुनीत आयोजन को सफल बनाने के लिए और विश्व में मानवीय व नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिए अपना अमूल्य सहयोग देकर महर्षि दयानन्द की देववाणी को विश्व भर में फैलाने में सहायक बनें।

संपर्क करें—श्री देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक,
१६५४, कूचा शिवनीराय दरियागंज, नई दिल्ली-२

यज्ञ तत्व

आर नं० १४५४२१/७९ नवम्बर/दिसम्बर १९८०
रजि० डी० नं० डी (डी) ८४१

पाठकों व लेखकों से

जिन पुराने पाठकों का वार्षिक शुल्क समाप्त होगया है, वे अपना वार्षिक शुल्क **अवश्य भेजें**। नये पाठक जो पत्र के वार्षिक सदस्य बनना चाहते हैं वे रु ये ११/- वार्षिक सदस्यता शुल्क भेज कर सदस्य बन सकते हैं। किसी विलम्ब की सूचना शीघ्र भेजें।

आप किसी भी प्रकार की सामयिक, सामाजिक, राजनैतिक, अपराध आदि की रचनाएं भेज सकते हैं. पसंद आ जाने पर अवश्य प्रकाशित की जायेगी। सदस्यों की रचनाओं को प्राथमिकता मिलेगी।

लेखकों से निवेदन है कि रचना के साथ टिकट लगा लिफाफा अवश्य भेजें, ताकि अस्वीकृत होने पर वापस भेजा जा सके।

पत्र के प्रचार-प्रसार में सहयोग के इच्छुक शीघ्र सम्पर्क करें।

—सम्पादक

लघुकथा निबंध बिक्री के लिए उपलब्ध है :—

१. हिन्दी लघुकथा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में	५०-००
२. हिन्दी का पहला आधुनिक लघुकथा संग्रह	४०-००
३. लघुकथा विशेषांक व संग्रह (शकुन्तला किरण)	५०-००
४. हिन्दी लघुकथा की वर्तमान स्थिति	३०-००
५. लघुकथा की सम्प्रेषणीयता	४०-००
६. हिन्दी लघुकथा दशा-दिशा-सभावना	४०-००
७. नया लेखक और लघुकथा	१५-००
८. लघुकथा की रचना धर्मिता	५०-००

लघु कथाकारों पर टिप्पणी :—

१. कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर की लघुकथाएं	४०-००
२. स्व० सुदर्शन की लघुकथाएं	४०-००
३. उपेन्द्र नाथ अश्क की लघुकथाएं	४०-००
४. आनन्द मोहन अवस्थी की लघुकथाएं	२५-००
५. शांति मेहरोत्रा की लघुकथाएं	२५-००
६. शिव नारायण उपाध्याय की लघुकथाएं	२५-००
७. रावी की लघुकथाएं	२५-००

नोट : आर्डर पर निबन्ध लिखे जाते हैं एवं विश्व की श्रेष्ठ लघुकथाकारों की लघुकथा उपलब्ध हैं।

जे. के. फास्ट फ्यूचर सर्विस,
डी-३२, सीटी पोस्ट आफिस लेन, गाजियाबाद

मुद्रक : अरुण प्रिंटर्स, दरियागंज, नई दिल्ली-२

स्मृति के वातायन से

संजय कुमार

कुछ बातें ऐसी होती हैं जो रह रहकर स्मृति के वातायन को दस्तक दे मन मस्तिष्क को बोझिल कर जाती हैं। कुछ ऐसी ही यह बात भी है जिसे मैं भूलना चाहता हूं पर भूला नहीं पाता। पिछले साल कालेज की कंमेस्ट्री सोसाइटी के साथ दिल्ली आया था। दिल्ली के लाल किले को देर तक देखने सुनने के बाद हम बाहर आये तब शाम ढल चुकी थी। चेंज होने के ख्याल से एक बूढ़े से वेंडर से हमने चिप्स लिया और उसे दस रुपये की एक नोट दी। चड्ढा, सूरी, कौशिक और बातों में खोये आगे बढ़ गये थोड़ी दूर पर एक टी स्टाल पर हम चाय पी रहे थे कि वह बूढ़ा लगभग दौड़ता हांफता बाकी पैसे हाथ में दबाये हमारे पास आकर कहने लगा 'बाबू जी आप लोग किधर निकल गये थे मैं तो आप को खोजते खोजते परेशान हो गया, ये रहे आपके पैसे !' मेरे लिए महत्व की बात वे चंद पैसे नहीं अपितु उस गरीब बूढ़े की सहनशीलता सहिष्णुता और उसकी ईमानदारी थी। अपने जिज्ञासु व्यवहार की वजह से मैंने उस ईमानदार बूढ़े का बैक ग्राउन्ड जानना चाहा। बड़ी मिन्नतों के बाद बाबा ने हमें बताया कि अपने विद्यार्थी जीवन में वे अपने कालेज के सबसे प्रतिभा सम्पन्न छात्र थे।

'लेकिन उसी समय स्वतन्त्रता आंदोलन की लहर चली। उनके जमीर ने भी जोर मारा···और वे सब कुछ छोड़ छाड़ स्वतन्त्रता समर में कूद पड़े। करकारी वारन्ट के कारण वे भूमिगत हो गये। ब्रिटिश सरकार ने अपनी नाकामियत का गुस्सा इनके परिवार पर उतारा। जिससे उनका परिवार अस्त व्यस्त हो गया। ····· और आज आजाद भारत में बाबा खोमचे लगाकर अपनी जिन्दगी की गाड़ी खींच रहे हैं। यातना भरे अतीत के समंदर में डूबे बाबा बता रहे थे—'काश ? बेटा या तो फिरंगियों ने मुझे गोली मार दिया होता या मैंने अपने आपको उस आन्दोलन से अलग रखा होता ! कम से कम ऐसे कष्टदायी दिन तो नहीं देखने पड़ते !' बाबा की गम से नम आंखों से दो बूंद आंसू लुढ़क उनकी बेतरतीब बढ़ी दाढ़ी उखझ गयी थीं। इधर हम सोच रहे थे हमारे सुनहरे 'कल' के लिए अपने पुष्पित फलित 'आज' को निछावर कर देने वाले इस बूढ़े बाबा को हमने क्या दिया ?·····क्या दिया??·····क्या दिया???